शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

# अनुसंधान की चुनौतियां एवं संभावनाएं

डॉ.पद्मा सिंह
प्रिंसिपल
शासकीय कॉलेज
पीथमपुर, धार, मध्यप्रदेश, भारत

## शोध संक्षेप

*अनुसंधान का कार्य ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में एक उच्चकोटि की साधना है। शोधक एक ऐसा साधक है जो अपने ज्ञान और विवेक से विषय के विविध पक्षों का उदघाटन करता है। वह तटस्थ रह कर विवेकपूर्ण ढंग से तर्क सम्मत निष्कर्ष निकालता है। ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्र शोध की परिधि में आते हैं। मानव की जिज्ञासा ही उसे नई खोज या नई उद्भावनाओं के लिए प्रेरित करती है। शोध से ज्ञान को गतिशीलता प्राप्त होती है।*

## प्रस्तावना

अंग्रेजी के रिसर्च शब्द का अनेक प्रकार से विश्लेषण किया गया है, जैसे- खोज, अनुसंधान, इत्यादि। किसी भी विषय को शोध परख दृष्टि से विश्लेषित करना और उसमें व्याप्त ज्ञान के विविध पक्षों को उदघाटित करना ही रिसर्च का पर्याय है। तथ्यों की खोज और विषय पर सूक्ष्म चिंतन ही शोध का मूल उद्देश्य है। शोध किसी विषय का सम्पूर्ण समीक्षात्मक परीक्षण है। शोध का उद्देश्य है कि नए सत्यों की खोज कर उसकी तर्क संगत विवेचना करना। किसी विषय की पूर्व प्रचलित मान्यताओं, सिद्धांतों और नियमों का सूक्ष्म परीक्षण कर उसमें सम्भावित संशोधन करना भी शोध का लक्ष्य है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि शोधकर्ता का लक्ष्य है विषय संबंधी भ्रांतियों का निराकरण कर सत्य निर्धारण के रुप में तर्कसंगत समाधान प्रस्तुत करना। यह नवीन तथ्यों का अनुसंधान है।

बौद्धिकता पर आधारित होने के कारण शोध का एक स्वतंत्र शास्त्र है जिसके अंतर्गत प्रामाणिक ढंग से विषय की नई उद्भावनाएं प्रस्तुत की जाती हैं। डॉ.सरनाम सिंह शर्मा ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है कि -"शोध की प्रकृति सत्य की प्रतिष्ठा करना है" । डॉ.नगेन्द्र ने कहा है कि अनेकता में एकता की सिद्धि का नाम ही सत्य है, इसका अर्थ है आत्मा का साक्षात्कार। आचार्य विनय मोहन शर्मा का मत है कि "शोध नए तथ्यो की खोज ही नहीं उनकी तर्कसंगत व्याख्या भी है। विद्वानों के मत से शोध किसी विषय पर किया गया अनुशासित अध्ययन है।

शोधकर्ता चयन किए गए विषय के विद्वान के निर्देशन में अपने अध्ययन को सही दिशा देता है और सत्य की ओर पहुँचने की बौद्धिक साधना करता है। मानव स्वभाव से ही रहस्यों पर से पर्दा उठाने वाला सत्यान्वेषी है। इसी कारण वह जन्मजात जिज्ञासावृत्ति के कारण साहित्य कला और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में निरंतर खोज में लगा रहता है। शोध कार्य मानव सभ्यता के विकास का सबसे बड़ा कारण है। पंचतत्वो की रहस्यात्मक सृष्टी आज मनुष्य के लिए अनजानी नहीं रही है। यह मनुष्य की शोधवृत्ति का ही परिणाम है कि वह प्रकृति के अनेक रहस्यों को भेदने में सफल हुआ है। धरती के गर्भ में छिपे अनेक रहस्यों और आकाश का अदभूत संसार

विज्ञान के अनुसंधानकर्ताओं ने हमारे सामने प्रकट कर दिया है। आज संचारतन्त्र और अंतरिक्ष तकनीकी के विकास से मानव समाज के स्थापित प्रतिमानों और परम्पराओं का नवीनीकरण हो रहा है। जिसके कारण अनुसंधान को भी नई दिशा मिली है।

साहित्य का क्षेत्र बडा व्यापक है जिसका संबंध मनुष्य के चिंतन, आचार विचार, और सभ्यता से रहा है। साहित्य में प्राचीनकाल से ही व्याकरण, काव्य शास्त्र और दर्शन से संबंधित विषयों की खोजकर नए चितंन का विकास किया गया। आज साहित्य को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए नई चुनौतियों का समाना करना पड़ रहा है। साहित्य की सभी प्रचलित विधाओं में इनका प्रभाव देखा जा सकता है।

मानव की शोधवृत्ति के कारण ही आज हम अंतरिक्ष के रहस्यों तक पहुच सके हैं। इसी के कारण विज्ञान, चिकित्सा और दूरसंचार के क्षेत्र में भी प्रगति के असंख्य द्वार खुल गये हैं जिनसे सामाजिक सन्दर्भों को नई दिशा मिली है। साहित्य संबंधी शोध के द्वारा मनुष्य जगत की प्रगति, सांस्कृतिक उतार चढ़ाव, मनोविज्ञान और सभ्यताओं का इतिहास जाना जा सकता है। मानव सभ्यता व संस्कृति का इतिहास इसी कारण सर्वसुलभ हो सका है।

आज तकनीक ने जिस रुप में समाज को प्रभावित किया है ,उसी रूप में मानवीय संवेदनाओं को भी प्रभावित किया है, इससे समाज और नैतिक मूल्यों में तेजी से परिवर्तन आया और साहित्य में इसी के परिणाम स्वरुप अनेक विमर्शों ने जन्म लिया है। साहित्य में किया गया शोधकार्य किसी साहित्यकार की आलोचना या गुण दोषों का अन्वेषण नहीं है, ना ही किसी साहित्यकार को स्थापित करने के लिए शोधकार्य किया जाता है, वरन उसके द्वारा रचे गये साहित्य के मूल्यांकन द्वारा किसी युग की तत्कालीन परिस्थितियां, चिंतन, धर्म और सामाजिक परिस्थितियों का भी अध्ययन किया जाता है। किसी भी साहित्यिक कृति या रचनाकार पर वर्तमान संदर्भो में अनुसंधान करते समय परम्परा और आधुनिकता के सभी पक्षों पर विचार करना आवश्यक है। "आधुनिकता और आधुनिकीकरण तथा आधुनिकता बोध आदि के पारस्परिक संबंधों की छानबीन के बिना आधुनिक आधुनिकता को नही समझा जा सकता।"1

## शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य

समाज के पुनर्निर्माण ,भारतीय चिन्तन दृष्टि की विशेषताओं का उदघाटन, राष्ट्र निर्माण की दिशाओं का मार्गदर्शन एवं ज्ञान विज्ञान की मुख्य धाराओं से जुडकर सांस्कृतिक समन्वय का प्रयास है। साहित्यिक शोध के विविध क्षेत्र हैं, इनको ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार शोध का विषय चुन सकता है। प्राचीन काल में रचे गए काव्य की खोज भी शोध का महत्वपूर्ण विषय हो सकता है। जिसके माध्यम से ज्ञात और अज्ञात कवियों के जीवन-वृत एवं उनकी कृतियों की पांडुलिपियों की खोज सम्पादन एवं समालोचना का महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकता है।

युग प्रवर्तक साहित्यकारों के योगदान का मूल्याकंन भी शोध का महत्वपूर्ण विषय है। उदाहरण के लिए संत पीपाजी का रचना संसार "लोक मंगल के लिए भक्ति एवं सामाजिक समन्वय के सच्चे भावों पर आधारित है। आज जब धर्म, नस्ल, जाति, क्षेत्र जैसे भेदो को गहराकर मानवता विरोधी ताकतें सक्रिय हैं, ऐसे में महान संत पीपाजी की वाणी की राह ही हमें अखण्ड

मानवता के पक्ष में ले जा सकती है।''2 वर्तमान संदर्भो में ,भक्त एवं संत कवियों के साहित्य पर शोधकार्य की अनेक संभावनाए हैं। इसी प्रकार साहित्य में मत-मतांतर एवं चिंतन धाराओं के प्रभाव का भी अध्ययन कर साहित्य के इतिहास पर नवीन दृष्टि डाली जा सकती है। साहित्य में होने वाले परिवर्तन एवं लेखन विधाओं के विकास का अध्ययन भी महत्वपूर्ण विषय हो सकता है।

रचनाकारों के संदर्भ में भाषा वैज्ञानिक अध्ययन ,विभिन्न काव्य रूपों का अध्ययन और शिल्पगत अध्ययन भी शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है। साहित्य के इतिहास संबंधी शोध से प्राचीन दस्तावेजों शिला -लेखों एवं यात्रा वृतांत की खोज की जाती है, जो पुरातत्ववेताओं व इतिहासविदों की खोज पर भी नई दृष्टि डाल सकते हैं। इस प्रकार के शोध कार्य से इतिहासकारों को भी मार्गदर्शन मिलता है। इस प्रकार के शोधकार्य में दस्तावेजों की खोज व परीक्षण एक श्रमसाध्य कार्य है ,जिसे प्रतिभाशाली शोधक ही दुराग्रह से मुक्त होकर कर सकता है।

युगीन परिस्थितियों एवं साहित्यकारों की रचना प्रक्रिया के अध्ययन से युगीन क्रांतियों एवं वैचारिक परिवर्तन को वर्तमान संदर्भो में समझा जा सकता है। भक्तिकाल, मध्यकाल, आधुनिककाल एवं वर्तमान समय के साहित्य व साहित्यकारों पर किया गया शोधकार्य सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों में आए परिवर्तन के कारण व परिणाम पर भी दृष्टि डालता है। ''भक्ति आंदोलन की तात्कालिक प्रेरणा का स्रोत तद्युगीन धार्मिक द्वंद्व को माना जा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत में भक्ति की परम्परा बहुत पहले से चली आ रही थी किन्तु जब इस्लाम ने हिन्दू धर्म पर आक्रमण किया तो इसके फलस्वरुप भक्ति की परम्परा नए रुप में सक्रिय हुई। इसी प्रकार 18वीं,19वीं शताब्दी में जब ईसाइयों ने हिन्दू मत पर आक्रमण किया तो उसी के फलस्वरुप आर्य समाज एवं ब्रह्म समाज जैसे आंदोलनों का सूत्रपात हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व देशभक्ति एवं राष्ट्रप्रेम की कविताओं की पृष्ठभूमि में राजनैतिक द्वंद्व कार्य कर रहा था। साहित्य के इतिहास पर शोधकार्य करते समय उस समय की सामाजिक व राजनैतिक परिस्थितियों का अध्ययन करना आवश्यक है।''3 काव्यशास्त्रीय अनुसंधान के भी विविध क्षेत्र हैं, जिसमें भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के इतिहास व सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में किसी रचनाकार को अध्ययन का विषय बनाया जा सकता है।

विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा एवं भारतीयता को गहराई से समझने की इच्छा ने विदेशियों को हिन्दी साहित्य के अनुवाद के लिए प्रेरित किया है। ''विश्व के विभिन्न देशों में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ाई जाती है। कुछ देश अपने विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन के लिए भारतीय सांस्कृतिक परिसर द्वारा भारतीय विद्वानों को आंमत्रित कर रहे हैं। इस विनिमय योजना के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्तियों के आधार पर कई विदेशी विद्यार्थी अध्ययन करने भारत आते हैं।''4 तुलसी, कबीर, सूरदास, बिहारी, प्रेमचंद जैसे रचनाकारों का साहित्य आज अनुवाद के माध्यम से पूरे विश्व में पढ़ा जा रहा है। ''वर्तमान समय में हिन्दी केवल एक भाषा नहीं है, अपितु यह एक देश ,एक जाति, एक संस्कृति और एक धर्म की पहचान बन गई है। यदि इसके इतिहास पर विचार किया जाए तो यह बात स्पष्ट हो

जाएगी।"5 अनुवाद साहित्य पर भी अनुसंधान करने की आज आवश्यकता है।

किसी साहित्यकार की कृति का शैली वैज्ञानिक अध्ययन भी किया जाता है। साहित्यकारों द्वारा किए गए नवीन प्रयोगों के आधार पर साहित्य की अनेक विधाएं प्रचलित हो गई हैं जिन पर शोध किया जा रहा है।

इसी प्रकार भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान के अन्तर्गत किसी भाषा परिवार ,ध्वनियों अथवा बोलियों का अध्ययन किया जाता है। यह एक वैज्ञानिक शोध है।इसमें प्रयोगषाला में आधुनिक उपकरणों व कम्प्यूटर तकनीक की सहायता से अनुसंधान किया जाता है।

वर्तमान आलोचना के बदलते स्वरुप ने साहित्य का मापदण्ड भी बदला है । आधुनिक युग में मीडिया और विज्ञापन मानव जीवन को सबसे अधिक प्रभावित कर रहे हैं। "एक जमाना था साहित्यकार और इतिहासकार दैनंदिन जीवन के रुपायन को साहित्य नहीं मानते थे। उससे कुछ हटकर होने पर ही साहित्य बनता था। किन्तु आज स्थिति एकदम विपरीत है। आज दृश्य और श्रृव्य माध्यमों से लेकर प्रिंट तक दैनंदिन जीवन का रुपायन ही सबसे बडी अंतर वस्तु है।"6 नए अनुसंधान मीडिया ,विज्ञापन, पत्रकारिता, दृश्य-श्रृव्य माध्यम लेखन ,अनुवाद एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूपों पर किए जा रहे हैं।

लोक साहित्य के विविध आयामों के अंतर्गत लोक बोली, लोक साहित्य, लोक संस्कृति, लोक कथा आदि से संबंधित शोध कार्य किया गया है, जिसके माध्यम से विभिन्न समाजों के लोक व्यवहार, परंपरा, रीति-रिवाज व अलिखित साहित्य का अध्ययन किया गया है। इस प्रकार के शोध से मनोविज्ञानियों व समाजशास्त्रियों को नए सिद्धान्तों के निर्धारण में दिशा मिलती है।

आंचलिक साहित्य जैसे ब्रज, बुंदेली, भोजपुरी, हरयाणवी, क्षेत्र की भाषा व साहित्य पर भी शोधकार्य किया गया है। आदिवासी व विविध अंचल की बोलियों पर स्वतंत्र रुप से शोधकार्य किया गया है। इस प्रकार के शोधकार्य में साक्षात्कार एवं रिकार्डिंग द्वारा विषय से संबंधित सामग्री एकत्र करनी पडती है। इसके लिए शोधक को फील्ड वर्क कर प्रमाण जुटाने पडते है। शोध के कुछ विषयों में प्रश्नावलियों का निर्माण आवश्यक होता है। शोध के परिणाम स्वरुप जो विचार प्रकाश में आता है, उसी के आधार पर शोधार्थी अपने अध्ययन को विस्तार और दिशा देता है। यही शोध की सार्थकता है।

साहित्य के अन्तर्गत सौंदर्यशास्त्रीय शोध, ऐतिहासिक शोध, मनोवैज्ञानिक शोध, समाजशास्त्रीय शोध, सांस्कृतिक शोध जैसे अंतरविद्यावर्ती शोध विषय की दृष्टि से शोधक को चिंतन के नए क्षितिज से परिचय करवाते हैं। शोधकार्य योजनाबद्ध तरीके से करने के लिए रूपरेखा निर्माण का कार्य सबसे महत्वपूर्ण है। इसी के आधार पर शोधक विषय पर केंद्रित रहकर सही दिशा में कार्य पूर्ण कर सकता है। शोध प्रबंध के सभी अध्याय अनुपात में हों एवं तर्कसंगत निष्कर्ष हों, इसका ध्यान रखा जाना महत्वपूर्ण है। "शोध की प्रक्रिया, जितनी व्यवस्थित और वैज्ञानिक होगी, शोध का परिणाम भी उतना उदात् एवं लाभदायक होगा।"7 अनुसंधान में सबसे महत्वपूर्ण है शोध भाषा का उचित प्रयोग । शोधप्रबंध भी एक महत्वपूर्ण सृजन कार्य है अतः अभिव्यक्ति शुद्ध व प्रभावशाली होना चाहिए। अनुसंधान करने वाले को शोधकार्य के प्रति पूर्ण समर्पण भाव रखना चाहिए जिससे शोधकार्य की गुणवत्ता बनी रहती

है ऐसा शोधकार्य भविष्य में समाज को दिशादर्शन दे सकता है।

## संदर्भ

*1.आधुनिकता साहित्य के संदर्भ में - गंगा प्रसाद विमल, पृष्ठ 19*

*2 पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ 37 सम्पादक डॉ..हेतु भारद्वाज, अंक- अक्टूबर-दिसम्बर 2009*

*3.भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत, डॉ..गणपतीचन्द्र गुप्त, पृष्ठ 236*

*4.खोज शोध त्रैमासिकी, सम्पादक प्रो.सूर्य प्रसाद दीक्षित, पृष्ठ 70, प्रवेशांक-जनवरी 2010*

*5 हिन्दी भाषा: इतिहास और स्वरुप, डॉ..राजमणि शर्मा, पृष्ठ 158*

*6.वाक्-'आलोचना में 'अ-लोकतंत्र' – जगदीश चतुर्वेदी, पृष्ठ 64, वर्ष 2008, अंक-04*

*7.साहित्यिक तीर्थ यात्रा के निष्कर्ष, डॉ..पी.के चन्द्रन, पृष्ठ 43*